परियोजना संवाद पत्र

सितम्बर 2022 | अंक-6

भीतर

- मुख्य परियोजना निदेशक की कलम से
- महिलाओं के जीवन में खुशियों ने दी दस्तक
- मधुमक्खी पालन द्वारा महिलाओं की आर्थिक स्थिति में सुधार
- आवारा पशुओं से बचाव के लिए कार्य
- जगदम्बा स्वयं सहायता समूह की महिलाओं की कहानी
- मशरूम आजीविका वर्धन का साधन
- रामपुर वन मण्डल में परियोजना (JICA) के अंतर्गत हो रहे कार्य का विवरण
- बंजर धरती पर आई हरियाली
- वन संसाधनः टौर की पत्तल से आर्थिकी में सुधार
- रोपड़ी ग्राम वन विकास समिति
- संस्थागत विकास एवं सूक्ष्म योजना
- आजीविका घटक के तहत व्यावसायिक योजनाओं का निर्माण
- गवर्निंग बॉडी बैठक
- आयोजित बैठकें / कार्यशालाएं / प्रशिक्षण कार्यक्रम
- मीडिया में परियोजना की गतिविधियाँ

हिमाचल प्रदेश वन पारिस्थितिकी तंत्र प्रबंधन एवं आजीविका सुधार परियोजना (JICA)

परियोजना कार्यालय, पॉटर्स हिल, समरहिल, शिमला-5 हिमाचल प्रदेश

दूरभाष: 0177-2830217 ई-मेल: cpdjica2018hpfd@gmail.com

चीड़ की पत्तियाँ के उत्पादः– राधे कृष्णा–स्वयं सहायता समूह, कंडा (VFDS) शिमला

मुख्य परियोजना निदेशक की कलम से ...

मैं (हिमाचल प्रदेश वन पारिस्थितिकी तंत्र प्रबंधन एवं आजीविका सुधार परियोजना) JICA में की जा रही गतिविधियों को छठवें संस्करण के माध्यम से आपके साथ साझा कर रहा हूँ। मैं इस अंक के प्रकाशन के लिए संबंधित कर्मचारियों को धन्यवाद व शुभकामनाएं देता हूँ। वे सभी लोग जिन्होंने इस अंक के लिए अपने क्षेत्र में की जा रही गतिविधियों से संबंधित लेख भेजें हैं, उन्हें भी बहुत बहुत बधाई देता हूँ। जिनके आलेखों को स्थान नहीं मिल पाया हैए उन्हें अगले अंक में सुधार के साथ प्रकाशित करने का प्रयास अवश्य होगा ऐसा मेरा मानना है।

हिमाचल प्रदेश में जाइका वानिकी परियोजना के माध्यम से ग्रामीण महिलाओं की आर्थिकी में निरंतर सुधार हो रहा है। परियोजना द्वारा आर्थिक रूप से पिछड़े ग्रामीण समुदाय विशेषकर महिलाओं को आजीविका वर्धन की विभिन्न गतिविधियों से जोड़कर उन्हें आर्थिक रूप से मजबूत करने के हर सम्भव प्रयास किये जा रहे हैं। वर्ष 2022 में कांगड़ा जिले को भी इस परियोजना में शामिल किया गया है।

अब यह परियोजना हिमाचल प्रदेश के 7 जिलों (किन्नौर, शिमला, बिलासपुर, मंडी, कुल्लू, लाहौल स्पीति व कांगड़ा) के 9 वनवृतों, 22 वनमंडलो, 72 वन परिक्षेत्रों में कार्यन्वित की जा रही है। यह परियोजना ग्रामीण महिलाओं के लिए वरदान साबित हो रही है। परियोजना के अंतर्गत स्वयं सहायता समूहों के सदस्यों को घर द्वार पर उत्तम प्रशिक्षण दिया जा रहा है।

हिमाचल प्रदेश जाइका वानिकी परियोजना में 400 से अधिक माइक्रोप्लान बनाने का व स्वयं सहायता समूहों की आजीविका बढ़ाने के लिए बिजनेस प्लान तैयार किये जा रहे हैं। वित वर्ष 2022 –2023 में 500 से अधिक स्वयं सहायता समूहों को परियोजना में जोड़ने का लक्ष्य रखा है। परियोजना के माध्यम से आजीविका की विभिन्न गतिविधियों जैसे मशरुम उत्पादन, हथकरघा, चीड़ की पतियों से बने सजावटी उत्पाद, सीरा सेपू बड़ी, टौर की पत्तलें बनाकर इन समूहों की आर्थिकी को बढ़ाया जा रहा है।

वनों के अत्यधिक दोहन तथा अन्य कई कारणों से जड़ी–बूटियों के अपघटन की रोकथाम की दिशा में हिमाचल प्रदेश वन पारिस्थितिकी तंत्र प्रबंधन एवं आजीविका सुधार परियोजना' के अतंर्गत पीएमयू स्तर पर जड़ी–बूटी प्रकोष्ठ बेहतरीन कार्य कर रहा है। जड़ी–बूटी प्रकोष्ठ द्वारा ग्राम वन विकास समितियों व जैव–विविधता समितियों के माध्यम से जड़ी–बूटियों के पुर्नउत्थान व संवर्धन की दिशा में अनेक कदम उठाए हैं। इससे जहां एक ओर लुप्त प्रायः होने वाली जड़ी–बूटियों का पुर्नउत्थान संभव हो पाएगा वहीं दूसरी ओर वनों पर आश्रित जन समुदाय को आय का एक अतिरिक्त साधन सतत् रूप में उपलब्ध होगा। जड़ी–बूटी प्रकोष्ठ ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले लोगों को वन भूमि और स्थानीय समुदायों की निजी भूमि में औषधीय पौधों की खेती करने हेतु मार्गदर्शन कर रहा है तथा तकनीकी जानकारी उपलब्ध करवा रहा है। जड़ी बूटियों में मुख्यतः प्रजातियों का प्रयोग सफल रहा है।

परियोजना के कार्यन्वयन में महत्वपूर्ण निभाने वाले सभी कर्मचारियों का भी मैं धन्यवाद करना चाहता हूँ तथा आग्रह करता हूँ कि वे भविष्य में भी अपना मनोबल ऊँचा रखेंगे व परियोजना को बेहतर बनाने में दिन रात एक कर देंगे।

शुभकामनाएं व धन्यवाद।

श्री नागेश कुमार गुलेरिया, भा. व. से.
अतिरिक्त प्रधान मुख्य अरण्यपाल एवं
मुख्य परियोजना निदेशक, (JICA)

महिलाओं के जीवन में खुशियों ने दी दस्तक

घरेलू काम में व्यस्त रहने वाली महिलायें चार दिवारी से निकलकर खुद का व्यवसाय कर रही है। परियोजना से जुड़कर आज गांव कि महिलाओं ने स्वावलंबन की मिशाल पेश की है।

जिला मण्ड़ी में आयोजित अर्न्तराष्ट्रीय शिवरात्रि मेले में जायका वानिकी परियोजना के अर्न्तगत मण्ड़ी वन मण्ड़लों में गठित किये गये स्वयं सहायता समूहों द्वारा तैयार किये गये उत्पादों की प्रदर्शनी लगाई गई।

इस प्रदर्शनी में महिलाओं को अपने उत्पाद बेचने के लिएएक मंच तो मिला ही साथ में सामूहिक रूप से कार्य करने की प्रेरणा भी मिली। प्रदर्शनी में महिलाओं द्वारा तैयार किये गये उत्पाद जैसे सेपू बड़ी, सिरा, माह की बड़ी, अलसी का नमक, कुल्लवी शॉल कुशन कवर इत्यादि थे। मुख्यमंत्री श्री जय राम ठाकुर ने महिलाओं द्वारा तैयार किये गये उत्पादों की सराहना की।

इस प्रदर्शनी में टौर के पत्तों से बनाई गई पत्तल लोगों का मुख्य आकर्षण बनी। प्रदर्शनी के छः दिनों में इन महिलाओं की लगभग 10000/–रू बिक्री हुई। इस प्रदर्शनी को लगाने से इनका आत्मविश्वास बढ़ा और भविष्य में ऐसी और प्रदर्शनियों में भाग लेने को तैयार है। सभी महिलायें परियोजना का धन्यवाद करती हैं कि उन्हें इस तरह की प्रदर्शनी में भाग लेने का सुअवसर दिया, इससे उनको नई पहचान मिली है और उनके जीवन में खुशियों की दस्तक हुई है।

लेखकः प्रोमिला ठाकुर (क्षेत्रीय तकनीकी इकाई समन्वयक) वन परिक्षेत्र, कटौला

मधुमक्खी पालन द्वारा महिलाओं की आर्थिक स्थिति में सुधार

हिमाचल प्रदेश पारिस्थितिकी तंत्र प्रबन्धन एंव आजिविका सुधार परियोजना (JICA वितपोषित) जंहा वनों के घनत्व में सुधार किया जा रहा है वहीं आर्थिक रूप से पिछड़े ग्रामीण समुदायों विशेषकर महिलाओं को आजिविका वर्धन की विभिन्न गतिविधियों से जोड़कर उन्हें आर्थिक रूप से मजबूत करने के हर संभव प्रयास किये जा रहे हैं। बिलासपुर वनमण्डल, घुमारवीं वन परिक्षेत्र में 5 वन विकास समितियां गठित की गई हैं जिनमें अब तक ग्रामीण निर्धन महिलाओं के 8 स्वंय सहायता समूहों द्वारा आजीविका वर्धन गतिविधियां शुरू की जा चुकी है। परियोजना द्वारा इन समूहों को उचित मार्गदर्शन प्रशिक्षण और आजीविका वर्धन शुरू करने हेतू जरूरी सामान व परिक्रामी निधि उपलब्ध करवाई गई है। अब इन समूहों द्वारा विभिन्न प्रकार

के परम्परागत उत्पाद तैयार किए जा रहे हैं व महिलाओं द्वारा अपने रोजमर्रा के कार्यों एंव घरेलू जिम्मेवारियों का यथावत निर्वहन करते हुए स्वंय सहायता समूह में भी कार्य करके सम्मान जनक अतिरिक्त आय अर्जित की जा रही है ।

वन विकास समिति कोठी–टोबका में एक स्वंय सहायता समूह ''जागृति''गठित किया गया है। इस समूह के गठन में व इसे सफलता की ओर ले जाने में परियोजना के कर्मचारियों को शुरू में भारी मुश्कत करनी पड़ी लेकिन लगातार प्रयास करने से समूह कार्य करने के लिए तैयार हुआ और सुझाई गई गतिविधियों में से समूह ने ''मधुमक्खी पालन'' को अपनाने की इच्छा प्रकट की। समूह की 10 महिलाओं ने परियोजना कर्मचारियों के मार्गदर्शन स्वयं व्यापार योजना तैयार की व स्वीकृत करवाई।

परियोजना द्वारा समूह की महिलाओं को घर–द्वार पर बढ़िया किस्म का प्रशिक्षण दिया गया और उन्हें मूल लागत का 50% = 86500/–तथा 100000/- परिक्रामी निधि उपलब्ध करवाई गई।

समूह द्वारा मार्च माह में मधुमक्खी पालन का कार्य शुरू किया गया तथा 22–04–2022 तक एक महीने में ही लगभग 90 किलो ग्राम शहद निकला जिसकी बाज़ार कीमत लगभग 40000/– बनती है। शहद की मांग स्थानीय स्तर पर ही काफी है और इस आय को अर्जित करने में मधुमखियों की देखभाल करने के अलावा कोई भी व्यय नहीं हुआ है। प्रत्येक सदस्य की 4000/– मासिक आय शुरूआत में ही हो गई है। अब महिलाएं बहुत खुश है और परियोजना का गुणगान व धन्यवाद करते नहीं थकती। इसी प्रकार अन्य स्वयं सहायता समूहों ने भी आय अर्जित करना शुरू की दी है। अन्य समूहों द्वारा सीरा, बड़ी बनाना, लहसुन अदरक पेस्ट तथा आचार चटनी आदि तैयार करने करने की गतिविधियां अपनाई गई हैं। अब महिलाएं अपने कार्य को बढ़ाने का और दूसरी मिलती–जुलती गतिविधियों को शुरू करने पर विचार कर रही हैं।

इस प्रकार परियोजना सफलता की ओर अग्रसर है और निश्चित रूप से ग्रामीण आर्थिकी में बड़ा बदलाव लाए जाने की सम्भावना है।

लेखकः रत्न लाल (सेवानिवृत, आर. ओ.)
(एस. एम. एस.)

आवारा पशुओं से बचाव के लिए कार्य

जायका परियोजना के तहत विकास कार्यों के लिए कराडसू गांव को चुना गया तो सबसे पहले नवगठित कार्यकारणी की बैठक प्रधान की अध्यक्षता में हुई। बैठक में चर्चा करते–करते यह फैसला लिया गया कि गांव के विकास कार्यों के लिए एक बैठक गांव वालों के साथ की जाये।

लेखकः दिनेश गुलेरिया (क्षेत्रीय तकनीकी इकाई समन्वयक) वन परिक्षेत्र, वन्यप्राणी कुल्लू

गांव वालों की सहमति से फसल के नुक्सान को आवारा पशुओं से बचाव को प्राथमिकता दी गई। फसल के बचाव के लिएगांव की हर गली, हर छोटी सडक के बीच में लोहे के गेट लगाने का निर्णय लिया गया। कराडसू गांव में लगभग 13 लोहे के छोटे–बड़ेगेट लगाए गए।

गेट लगाने से लगभग 50 परिवारों को लाभ हुआ और इसमें 10 हेक्टेयर भूमि आती है। अब गांव वालों का कहना है कि अनाज पहले की बजाय अब लगभग दोगना हो गया हैं और यह तभी संभव हुआ जब लोहे के गेट लगवाए गए। गांव वालों ने जायका परियोजना की समस्त टीम का तहे दिल से आभार व्यक्त किया।

जगदम्बा स्वयं सहायता समूह की महिलाओं की कहानी

परियोजना के तहत सुकेत वन मण्डल में बलद्वाड़ा वन परिक्षेत्र का चुनाव बैच–II में किया गया था। जिस में वन परिक्षेत्र के अर्न्तगत सात कमेंटियां गठित की गई। इन्हीं कमेटियों में से एक कमेटी गोभरता गांव में गठित की गई। कमेटी के अर्न्तगत दो स्वयं सहायता समूहों का गठन किया गया। इन्ही में से एक है जगदम्बा स्वयं सहायता समूह, यह समूह 8–01–2017 को गठित हुआ था। जब परियोजना द्वारा इस गांव में ग्रामीण सहभागिता मूल्यांकन की बैठकें कि गई तो जगदम्बा समूह की महिलाओं ने आजीविका वर्धन गतिविधि के तहत अपनी रूचि दिखाई कि वे परियोजना द्वारा प्रशिक्षण लेना चाहती हैं ताकि वे आत्म–निर्भर बन सके।

इस समूह में 12 महिलाए हैं। जो 25 रू की प्रति महीने की मासिक बचत करती हैं। समूह की प्रधान श्रीमति सत्या देवी व सचिव पूनम शर्मा हैं।

समूह की सभी महिलाओं ने आपसी सहमति से डेयरी उत्पादन में अपनी रूचि दिखाई जिस के तहत इन की व्यवसाय योजना बनाई गई व 6–09–2021 को

परियोजना की तरफ से इन को प्रशिक्षण दिलवाया गया। जिस में उन्हें पनीर, खोआ व अन्य दूध से बनी मिठाईयां बनाना सिखाई गई।

प्रशिक्षण के बाद इन महिलाओं द्वारा अर्जित की गई राशि का विवरण इस प्रकार है।

वर्ष	राशि
अक्तूबर 2021 से मार्च 2022	71,940रू
अप्रैल 2022	11,000रू
कुल अर्जित राशि	82,940रू

समूह की महिलाएं पनीर, खोआ व घी बनाकर रिवालसर बजार व शादियों में ऑर्डर पर बेचती हैं। नलवाड़ मेला सुन्दरनगर में भी समूह की महिलाओं ने अपने तैयार किए हुए उत्पादों को प्रर्दशनी के लिए लगाया था जिस में राशि 2460.00 रू अर्जित की थी।

समूह की महिलाओं ने बताया की परियोजना उन के लिए वरदान बन कर आई इससे उन की आर्थिक स्थिति में सुधार हुआ है।

लेखक: किरण माला (क्षेत्रीय तकनीकी इकाई समन्वयक) वन परिक्षेत्र बलद्वाड़ा

मशरूम आजीविका वर्धन का साधन

जाइका परियोजना के अर्न्तगत चलाई जा रही गतिविधियों में आजीविका वर्धन के तहत ग्रामीण परिवारों की आय में वृद्धि हेतु सामूहिक रूप से कार्य करने को बढ़ावा देने के लिए टिककर पंचायत के वार्ड कठोगन में 17 किसानों का स्वयं सहायता समूह बनाया गया है ताकि किसान समूह में संगठित होकर कार्य करें जिससे सहभागिता को बढ़ावा मिले। जोगनी माता स्वयं सहायता समूह को 2 दिवसीय (01–03–2021 से 02–03–2021) प्रशिक्षण के0 वी0 के0 सुन्दरनगर में दिलवाया गया।

समूह के लोगों को मशरूम उत्पादन का डेमो दिया गया, डेमो में 60 बैग मशरूम उत्पादन के लगाए जिससे मशरूम उत्पादकों काफी फायदा हुआ। डिंगरी मशरूम उत्पादन के समूह के सभी सदस्यों ने दो – तीन बार 1280 रू. के मशरूम बेच कर समूह के खाते में जमा किए।

दूसरी फसल में 600 बैगों से 7 क्विन्टल मशरूम तैयार किया गया, जिसमें 4 क्विन्टल मशरूम बेचा गया जिससे 26630रू. का लाभ हुआ तथा 2 क्विन्टल मशरूम बरसात के मौसम के कारण सड़ गया। तीसरी फसल के लिए 10–10–2021 को हमारे समूह से 3 सदस्य सोलन, चम्बा घाट गये वहां 11–10–2021 से 16–10–2021 तक मशरूम का प्रशिक्षण किया उसके पश्चात 16–11–2021 को पालमपुर से 170 बैग कम्पोस्ट के लाये। मशरूम बटन की फसल माह के मध्य तक चली, बटन मशरूम से 14250रू. लाभ हुआ।

परियोजना द्वारा शुरूआती दौर में समूह के माध्यम से स्वयं सहायता समूह बनाकर लोगों को आजीविका वर्धन संबंधी गतिविधि को करवाना यह एक छोटी योजना थी परन्तु जिस प्रकार लोगों ने सहभागिता को अपनाया वह अपने विकास प्रक्रिया के प्रति जागरूक व प्रेरित हुए यह परियोजना की सफलता का परिचायक है। जिससे परियोजना अधिकारियों व कर्मचारियों का विश्वास बढ़ा समूह के सदस्यों ने मशरूम उत्पादन की वजह से अपनी आमदानी बढ़ाई और अपनी आर्थिक स्थिति सुधारी उसके लिए समूह के सदस्य परियोजना का धन्यवाद करते नहीं थकते हैं।

लेखक: सरला देवी (क्षेत्रीय तकनीकी इकाई समन्वयक) वन परिक्षेत्र, सरकाघाट

रामपुर वन मण्ड़ल में परियोजना (JICA) के अंतर्गत हो रहे कार्य का विवरण

केंचुआ खाद उत्पादन प्रशिक्षणः

दिनांक 26–02–2022 को HIMOD –संस्थान द्वारा केंचुआ खाद उत्पादन एवं इसके विपणन संबंधी जानकारी लबाना–सदाना, किन्नु एवं कंधार सुग्गा ग्राम वन विकास समितियों में गठित स्वयं सहायता समूहों के सदस्यों को दी गई। इन स्वयं सहायता समूहों द्वारा आजीविका गतिविधि के रूप में केंचुआ खाद उत्पादन का चयन किया गया । केंचुआ खाद की मांग स्थानीय क्षेत्र में अधिक होनें के कारण समूह के सदस्यों को आसानी से खाद के विक्र हेतु बाजार उपलब्ध होगा।

इसके साथ ही इन स्वयं सहायता समुहों को उत्पादन के लिए इकाई में उपयोग होने वाले उपकरण व मशीनरी की खरीद के लिए परियोजना के तहत पूंजीगत लागत का 50 प्रतिशत योगदान दिया गया है। अतः परियोजना के द्वारा दिए गए योगदान और समूह योगदान के साथ ग्राम वन विकास समिति लबाना–सदाना, कंधार–सुग्गा के स्वयं सहायता समूह जय मां दूर्गा और भगवती मां द्वारा वर्मीकंपोस्ट बनाने के लिए गड्ढे और शेड का निर्माण किया गया।

पनीर बनाने का प्रशिक्षणः

दिनांक 04–03–2022 व 05–03–2022 को जय लक्ष्मी नारायण स्वयं सहायता समूह के प्रतिनिधियों के राज्य सहकारी दुध प्लांट दतनगर, रामपुर में दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। प्रशिक्षण में गुणवतापुर्ण पनीर बनाने, उत्पाद प्रसंस्करण और उपयुक्त मशीनरी, नई तकनीकों पर सैधांतिक और व्यवहारिक प्रदर्शन को शामिल किया गया। पनीर बनाने की गतिविधि पहले से ही कुछ स्वयं सहायता समूहों के सदस्यों द्वारा की जा रही है, इस परियोजना का उद्देश्य इस प्रशिक्षण के माध्यम से स्वयं सहायता समूहों के सदस्यों के कौशल के ज्ञान में सुधार करना व उनकी क्षमताओं में उनके विश्वास को और सुदृढ़ करना है।

चूली तेल निष्कर्षणः

दिनांक 11–03–2022 को दिनेश इंडस्ट्रीज प्राईवेट लिमिटेड में परियोजना द्वारा ग्राम वन विकास समिति कांधार सुग्गा में निर्मित जय पंचवीर समूह के लिए चूली तेल निष्कर्षण पर एक दिवसीय – प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। प्रशिक्षण में विभिन्न तरीकों का उपयोग करते हुए चूली तेल निष्कर्षण यांत्रिक तरीकों जैसे खूबानी या गंठली को तोड़ना और तेल निकालने पर सैधांतिक और व्यवहारिक प्रदर्शन को शामिल किया गया। चूंकि यह क्षेत्र एक बागवानी क्षेत्र में स्थित है और अधिकांश लोग इन गतिविधियों में शामिल है, इसलिए इस स्वयं

सहायता समूह द्वारा चूली निष्कर्षण तेल की प्रक्रिया को आजीविका गतिविधि के रूप में लिया गया।

रामपुर वन मण्ड़ल के सराहन वन परिक्षेत्र के अंतर्गत गठित ग्राम वन विकास समितियों व स्वयं सहायता समूहों के लिए नोगली में 2 दिवसीय (दिनांक 28–03–2022 व 29–03–2022) को प्रशिक्षण शिविर लगाया गया। इस प्रशिक्षण शिविर में ग्राम वन विकास समिति के वन विकास समितियों के प्रधान, उप प्रधान, सचिव व कोषाध्यक्ष तथा इस स्वयं सहायता समूहों के परियोजना के तहत किये जाने वाले कार्य का विवरण, सांझा वन प्रबंधन का महत्व, परियोजना अभिविन्यास व क्षमता निर्माण इस स्वयं सहायता समूहों के गठन व सूक्ष्म योजना प्रक्रिया के बारे में जानकारी दी गई इसके अलावा कार्यकारिणी, पदाधिकारियों के कर्तव्यों व जिम्मेदारियों, अभिलेख का रख रखाव आदि का प्रशिक्षण दिया गया।

लेखकः गरिमा वर्मा (एस.एम.एस. वन मण्डल, रामपुर)

वन संसाधनः टौर की पत्तल से आर्थिकी में सुधार

हिमाचल प्रदेश पश्चिम हिमालय क्षेत्र स्थित एक पहाड़ी राज्य है। मण्ड़ी जिला हिमाचल प्रदश की मध्य पहाड़ियों में स्थित है। यह कहानी मण्ड़ी जिला के मण्ड़ी विकास खण्ड व वन परिक्षेत्र कटौला की वार्ड बिहनधार –1 वी.एफ.डी.एस. के स्वयं सहायता समूह जिसका नाम (पत्तल मेकिंग समूह) है। बिहनधार गांव जिला मुख्यालय से लगभग 17 कि0 मी0 दूरी पर है जोकि मुख्य मार्ग से 7 कि0 मी0 की दूरी पर है। इस वार्ड में कुल 87 परिवार है। जिसमें 43 सामान्य और 44 अनुसूचित जाति के परिवार है यहां के लोगों का मुख्य व्यवसाय कृषि व मजदूरी है। हिमाचल प्रदेश वन पारिस्थितिकी तंत्र प्रबंधन एवं आजीविका सुधार परियोजना की ओर से 29–11–2020 को एक बैठक की गई, इस बैठक में पता चला कि यहां के लोग अपनी आजीविका की पूर्ति के लिए वन संसाधन पर निर्भर है। यहां के 10 परिवारों ने अपनी आजिविका को चलाने के लिए सामूहिक तौर पर पत्ता पलेट समूह बनाने का निर्णय किया क्योंकि यहां टौर के पत्ते की मांग व प्रचलन अधिक है तथा अन्य आजीविका के साधन बहुत कम है समूह के लोग द्वारा आय सृजन गतिविधि व्यापार योजना पतल बनाने को आग्रह किया गया।

जिसके तहत समूह को पतल मशीन व प्रशिक्षण

दिया गया। इस समूह में 6 परिवार सामान्य और 4 परिवार अनुसुचित जाति से सम्बन्ध रखते है। यह सभी परिवार निम्न परिवार से सम्बन्ध रखते है।

समूह के प्रधान श्री खेम चन्द, सचिव श्री इन्द्र व श्रीमति सुमित्रा देवी का कहना है कि आज से 50 वर्ष पुर्व हमारे पूर्वज पशु पालन और भेड़ –बकरी पालन का कार्य करते थे। जंगल बहुत घने हुआ करते थे, भेड़–बकरियों के चारे व छाते बनाने के लिए टौर के पत्तों का उपयोग करते थे। इसके बाद छोटे से गांव में पत्ते बनाने का कार्य शुरू किया गया व गांव में आयोजित कार्यक्रमों में भोजन करवाने के लिए पत्तों का निर्माण किया गया। इसके पश्चात पत्तलों को बनाकर मण्ड़ी में बेचना आरम्भ कर दिया और एक समय में 17 कि0मी0 का रास्ता चलकर इन्हें बाजार पंहुचाना पड़ता था। इनका मानना है कि हम दिन को पत्ते लाते थे बनाते तथा सुबह बेच देते थे।

सुमित्रा देवी जी का कहना है कि वर्तमान में जैसे –जैसे कार्यक्रम अधिक बढ़ रहे है इनकी मांग भी अधिक हो रही है। आजकल 20 से 25 हजार पत्तल एक दिन में बिक जाते है। हाथ से पत्तल बनाने में बहुत समय लगता है। समूह के सदस्यों का मानना है कि जैसे ही हमें हिमाचल प्रदश वन पारिस्थितिकी तंत्र प्रबंधन एवं आजीविका सुधार (जाइका) परियोजना की ओर से पत्तल मेंकिग मशीन व प्रशिक्षण दिया गया जिससे हमारा कार्य और भी आसान हो गया। अब हम एक घण्टे में 100 से ज्यादा पत्ता पलेट बना देते हैं। पहले हमें ठेकेदार आर्डर देता था अब हमारे पास आर्डर आते हैं। पहले ठेकेदार हमसे 1 रू0 में एक पत्ता लेकर स्वयं 2 रू0 में बेचकर मुनाफा कमाते थे। अब स्वयं पलेट बनानेके बाद हमे इसके प्रति पलेट 4 रू0 मिलते है। हमारे समूह को सीधा मुनाफा हो रहा है। पत्ता पलेट की मांग भी बहुत बढ़ रही है। पहले हाथ से बने पतल को लम्बे समय तक स्टोर नहीं कर सकते थे लेकिन अब पलेट बनाने के बाद इसे लम्बे समय तक स्टोर कर सकते हैं। हल्का होने के कारण परिवहन में आसानी होती है, पलेट के साथ–साथ अब डुने भी तैयार किये जाते है जिसकी मांग भी अधिक है। डुने बनाने में पहले ज्यादा पत्ते तथा ज्यादा समय लगता था परन्तु मशीन पर कम समय समय व कम पत्ते लगते। विभागीय प्रदर्शनियों में लगाये गए स्टॉल में पत्ता प्लेट को दिखाया और बेचा गया तथा आर्डर भी लिएगए। अभी तक आर्डर पर समूह ने 4000 पत्ता प्लेट बनाकर बेच दी है।

समूह के प्रधान का कहना है कि यह हमारे लिए बहुत बड़ी उपलब्धि है इससे हमारे आर्थिक व सामाजिक जीवन में जागरूकता आई है व हमारा आत्म विश्वास भी बढ़ा है।

लेखकः जितेन शर्मा, (एस.एम.एस. मण्डी)

रोपड़ी ग्राम वन विकास समिति

हिमाचल प्रदश के मण्डी जिला का कस्बा जोगिन्द्रनगर का छोटा सा गांव रोपड़ी तथा ग्राम पंचायत रोपड़ी कलेहडू है। समुद्रतल से लगभग 6050 फीट की ऊंचाई में बसा यह एक छोटा सा गांव चील, काफल, बुराशं, वान और बहुत प्रकार के पेड़ पौधों से घिरा हुआ है जो इसकी शोभा बढ़ाते है। इस गांव की जनसंख्या लगभग 2500 के करीब है। यह गांव लगभग 70 प्रतिशत जंगल से घिरा हुआ है।

ग्राम वन विकास समिति (VFDS) का परिचयः

हिमाचल प्रदेश पारिस्थितिकी तंत्र प्रबन्धन एंव आजीविका सुधार परियोजना में रोपड़ी गांवों को अप्रैल 2021 में शामिल किया गया। लगातार पंचायत के प्रतिनिधियों से परियोजना के बारे मं चर्चा की गयी व अनापति प्रमाण पत्र लिया और संभावित वार्ड का परियोजना के माप दंड के अनुसार चयन किया गया इसी प्रक्रिया में ग्राम वन विकास समिति (VFDS) का चयन किया गया और VFDS में 2 स्वयं सहायता समूह का भी चयन किया गया। ग्राम वन विकास समिति (VFDS) का अध्यक्ष श्री चन्द्र प्रकाश तथा सचिव श्रीमति बबली देवी को चुना गया। देव पशाकोट व आस्था स्वयं सहायता समूहों का चयन किया । देव पशाकोट स्वयं सहायता समूह ने हल्दी उत्पादन को अपनी आय वर्धन के लिए चुना और आस्था स्वयं सहायता समूह ने भी हल्दी उत्पादन को अपनी आय वर्धन के लिए चुना।

हिमाचल प्रदेश पारिस्थितिकी तंत्र प्रबन्धन एंव आजीविका सुधार परियोजना के आने से गांव में भिन्न भिन्न समूहों का गठन किया गया, उसके बाद उनको वनों के प्रति जागरूक किया गया। जिससे वनों का कटान, अवैध शिकार में बहुत कमी आई है। परियोजना के कारण गांवों में संगठित होकर काम करने की भावना जागृत हुई। इसका जींवत उदाहरण 28 अप्रैल 2022 को देखने को मिला जब रोपड़ी के जंगल में आग लगगई थी और इस आग को बुझाने के लिए युवक मंडल धार व वन विभाग के कर्मचारी, एस.एच.जी, महिला मण्डल रोपड़ी, युवक मण्डल रोपड़ी और वी एफ डी एस सदस्य मिलकर जंगल में गए थे और जंगल की आग को कड़ी मुश्कत के बाद नियंत्रित किया गया। लोगों को जागरूक करने के लिए परियोजना व वन विभाग के कर्मचारियों द्वारा अप्रैल माह में जागरूकता अभियान शुरू किया गया और ऐसा ही एक जागरूकता कार्यक्रम ग्राम वन विकास समिति रोपड़ी में भी हुआ। इस कार्यक्रम में वन रक्षक (अमित कुमार) और फील्ड तकनीकी इकाई समन्वयक (सुमित बरवाल) विशेष रूप में सम्मिलित हुए। और इस कार्यक्रम में आग बुझाने के तरीकों के बारे में विस्तृत जानकारी मुहैया करवाई गई। जैसा कि हम जानते है कि गर्मी के मौसम में जंगलो में लगने वाली आगएक बहुत बड़ी समस्या है। यह वायु प्रदूषण, वन्य जीवों, वनस्पतियों और पर्यावरण को नुक्सान पहुंचाती है। जंगलों के आसपास रहने वाली मानव आबादी के लिए भी यह एक बड़ा खतरा है। ग्रामीण जलाऊ लकड़ी, पशुओं के चारे, जंगली फलों के लिए जंगल पर निर्भर हैं और जंगल स्वच्छ हवा और तापमान बनाऐ रखने और अन्य कई लाभ प्रदान करते है। जंगल में आग लगने की स्थिति में उन्हें क्या शुरूआती कदम उठाने चाहिए और आग पर किस तरह काबू पाया जाऐ इसके बारे में जागरूक किया गया। वह सभी जंगल बचाने को अपनी जिम्मेवारी समझते है, उन सभी का यह बहुत साहसिक कार्य था कि उन्होनें पहल की और जंगल की आग को बुझाया।

आग पर काबू पाने के बाद सामूहिक चित्र

उन्होनें जागरूकता अभियान के दौरान सिखाई गई सभी आवयश्क बातों को ध्यान में रखा। वन रक्षक को आग के बारे में सूचित किया गया और समिति के सभी सदस्यों,एस. एच.जी., महिला मण्डल रोपड़ी, युवक मण्डल रोपड़ी और अन्य ग्रामीणों ने एक टीम में काम किया और आग में काबू पाने में सफल रहे। वे सभी उचित सावधानी से आग बुझाने में मदद कर रहे थे, इससे पता चलता है कि हिमाचल प्रदेश पारिस्थितिकी तंत्र प्रबन्धन एंव आजीविका सुधार परियोजना जापान सरकार (JICA) के तहत शुरू किए गए जागरूकता अभियान से लोगों के व्यवहार पर सकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है।

लेखकः सुमित भरवाल, (क्षेत्रीय तकनीकी इकाई समन्वयक) जोगिन्द्र नगर

बंजर धरती पर आई हरियाली

JICA वित्त पोषित 'हिमाचल प्रदेश वन पारिस्थितिकी तंत्र प्रबंधन और आजीविका सुधार परियोजना' ऐसी परियोजना है जोकि बंजर पड़ी धरती को हरियाली प्रदान करने में कृत संकल्प है। परियोजना के सब से पहले और मुख्य घटक सतत चिरस्थाई वन पारिस्थितिकी तंत्र प्रबंधन की सफलता के लिए जंगलों का विकास अति आवश्यक है। वन क्षेत्रों का विकास सामाजिक और आर्थिक विकास के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।

जंगलों से होने वाले लाभों को जानते हुए भी हम लगातार उन्हें काटते ही जा रहे हैं। आज की भौगोलिक परिस्थितियों और बिगड़ते पर्यावरण के लिए हम स्वयं ही रचियता बन बैठे हैं और अपने विनाश को स्वयं निमंत्रण देकर अपने और इस सुदंर सी धरती के विनाश का आधार बन कर बैठे हैं।

इस धरा को विनाश से बचाने के लिए जाइका वानिकी परियोजना ने एक नवीन पहल की है और वह है पौधारोपण का कार्य जिससे कि धरती विनाश नहीं अपितु सौंदर्य का प्रतीक बनी है। अवनि के सौंदर्य एवं जीवन की खुशहाली के लिए जाइका वानिकी परियोजना ने बहुत ही अच्छा प्रयास किया है। इसी प्रयास के चलते तारादेवी वन परिक्षेत्र के अंतर्गत गठित पनेश ग्रामीण वन विकास समिति द्वारा पहले लैंटाना उन्मूलन का कार्य और तत्पश्चात वर्ष 2020 में 10 है. क्षेत्र में पौधा रोपण का कार्य करवाया गया है जहां पर पौधों का अच्छा विकास हो रहा है।

वर्ष 2020 अर्थात पौधा रोपण से पहले यहां पर केवल लैंटाना और कंटीली झाड़ियां थी जिनका कोई उपयोग नहीं था और इतने बड़े जंगल में वह केवल पशु चराते थे। बिल्कुल जंगल के साथ होने पर भी उन्हें पशु चारे के लिए मीलों दूर जाना पड़ता था या खरीद कर लाना पड़ता था परन्तु फिर भी वे अपने पशुओं के लिए भरपूर मात्रा में चारा उपलब्ध नहीं करवा पाते थे। यहां के लागों के हालात ऐसे थे कि 'समंदर में रह कर भी प्यासे' या हम यह कह सकते हैं कि जंगल के इतने नजदीक होते हुए भी हरियाली के लिए तरसते थे।

पनेश गांव में लगभग 65 परिवार हैं जिसमें से 45 परिवार ऐसे हैं जोकि औसतन तीन–चार पशु पालते हैं। ऐसा नहीं है सबके पास अपने गुजारे लायक जमीन है। पर लगभग 12 परिवार ऐसे हैं जिन्हें पशुओं के लिए सालाना कम से कम 6000 से 7000रू तक का घास खरीदना ही पड़ता था।

वर्ष 2020 में ग्रामीण वन विकास समिति द्वारा जी0 सी0 एल0 पनेश में 10 है. क्षेत्र में पौधारोपण करवाया गया जिसमें यहां के स्थानीय लोगों विशेष कर महिलाओं ने बढ़चढ़ कर भाग लिया।

पौधारोपण के पश्चात गांव के लोगों ने जंगल में पशुओं को छोड़ना बंद कर दिया है और यदि कोई दूसरे गांव के लोग यहां पशु चरने के लिए छोड़ते हैं तो गांव के लोग इकटठे होकर उन्हें हटाते हैं। महिलाओं का कहना है कि दो सालों से वो लोग इस जंगल से घास काट रहे हैं और उन्हें अब पशुओं के लिए चारा खरीदने की आवश्यकता नहीं पड़ती है। पनेश गांव की सभी महिलाएं इकटठी होकर घास लाने के लिए जाती है। वर्ष 2020 में ही पौधारोपण हुआ और उसी साल से यहां की महिलाओं ने पौधारोपण क्षेत्र से लगभग 80 गड्डी घास की काटी है और वर्ष 2021 में 250 गड्डी घास की काटी है। यहां की महिलाओं ने आपसी सहमति से ये तय किया है कि घास काटने के पश्चात वह उस जगह पर झाड़ियों की सफाई भी करेंगी।

यहां पर पौधों से जंगल का विकास हो रहा है और इस की सफलता के पीछे यहां के स्थानीय लोगों का ही योगदान है। इन लोगों ने इस बात को समझा है कि पौधारोपण से न सिर्फ परियोजना को कोई लाभ है अपितु स्थानीय लोगों को ही लाभ है और वे इस से लाभ भी उठा रहे हैं जिस का विवरण इस प्रकार हैः–

पौधारोपण से पहले की स्थितिः–

- केवल कांटेदार झाड़ियां और पशुचारे की कमी।
- भूमि कटाव।
- पशुचारे के लिए पैसे खर्च करने पड़ते थे।
- लगभग 12 परिवार पशुचारा खरीदते थे जिसका विवरण इस प्रकार हैः–

लेखकः प्रतिभा शर्मा (क्षेत्रीय तकनीकी इकाई समन्वयक) वन परिक्षेत्र, तारादेवी

घास की एक गड्डी की कीमत	खरीदने वाले कुल परिवार	घास का खरीदने का खर्चा	12 परिवारों का कुल खर्चा
200 रू	12	6000रू	72000 रू

पौधारोपण से बाद की स्थिति :–

- 10 हैक्टेयर भूमि पर हरियाली ही हरियाली।
- भूमि कटाव की रोकथाम।
- गांव के 45 परिवारों के लिए पशुचारे की आसानी से उपलब्धता।
- लगभग 72000/–रू की बचत।
- जंगलों में वृद्धि।
- प्राकृतिक सौंदर्य में वृद्धि।
- लैंटाना और कंटीली झाड़ियों से छुटकारा।

पौधा रोपण के लाभों को देखते हुए यहां के लोग बहुत खुश हैं क्योंकि न सिर्फ जंगलों का विकास हो रहा है अपितु लोगों की रोजमर्रा की आवश्यकताएं भी पूरी हो रही है। ग्रामीण वन विकास समिति और स्थानीय लोगों की सहभागिता से हमें चाहे छोटा सा ही सही लेकिन एक सफल प्रेरणा स्रोत मिला है जिस की सूत्रधार जाइका परियोजना और लोगों की जन सहभागिता है।

संस्थागत विकास एवं सूक्ष्म योजना

प्रथम, द्वितीय, तृतीय तथा चौथे चरण की 430 ग्राम वन विकास समितियों व जैव–विविधता प्रबन्धन समितियों उप समितियों के चयन की प्रक्रिया पूरी हो चुकी है। 395 वी. एफ.डी.एस., 18 वन मण्डलों के 56 वन परिक्षेत्रों व 5 वन्यप्राणी परिक्षेत्रों के सम्बन्धित वार्डों की ग्राम वन विकास समितियों व जैव विविधता प्रबन्धन समिति, उप समितियों का गठन हो चुका है और 276 वन विकास समितियों की सूक्ष्म योजनाऐं तैयार हो चुकी हैं। 35 वन विकास समितियों के गठन की प्रारम्भिक चरण के काम शुरू हो चुका है। सूक्ष्म योजनाएं तैयार करने हेतु सहभागी ग्रामीण मूल्यांकन की प्रक्रिया आरम्भ की गई है।

आजीविका घटक के तहत व्यवसायिक योजनाओं का निर्माण

सूक्ष्म योजना तैयार करते समय अनेक आयसृजन गतिविधियां सामने आई हैं। अनेक बैठकें आयोजित की गईं और विस्तृत वार्तालाप किया गया ताकि औपचारिक स्वयं सहायता समूहों और समान रूचि समूहों को सक्रिय बनाया जा सके। उनकी लिखित सहमति ली गई। उनके चुनाव करवाए गए तथा उन्हें अपने प्रतिनिधियों, नियमों और विनियमों का चनाव करने के लिए कहा गया। बैंक खाता खुलवाया गया तथा समूह का मासिक योगदान शुरू किया गया। नेतृत्व, कार्यवाही लेखन, लेखा–जोखा रखने, आपसी लोनिंग आदि बारे में 110 समूहों को प्रशिक्षण प्रदान किया गया। खुम्ब की खेती, हैंडलूम, मुर्गी पालन, मधुमक्खी पालन, बुनाई, अचार, पत्तल बनाने की 250 व्यावसायिक योजनाऐं तैयार हो चुकी है।

गवर्निंग बॉडी बैठक

हिमाचल प्रदेश वन पारिस्थिकी तंत्र प्रबंधन एवं आजीविका सुधार परियोजना के नियामक मण्डल की सातवीं बैठक 28 अप्रैल, 2022 को सचिवालय के आर्मसडेल भवन सभागार, शिमला में आयोजित की गई जिसकी अध्यक्षता मुख्य सचिव (वन) हि.प्र. सरकार, डॉ रजनीश ने की। इस सभा में नियामक मण्डल सदस्यों, मुख्य परियोजना निदेशक एवं सदस्य सचिव, परियोजना निदेशक तथा कार्यालय कर्मचारियों ने भाग लिया। सभा के आरम्भ में मुख्य परियोजना निदेशक एवं सदस्य सचिव मुख्य ने नियामक मण्डल के अध्यक्ष एवं अन्य सदस्यों का अभिनन्दन किया। उन्होंने परियोजना के लक्ष्यों, उद्देश्य, परिव्यय तथा घटकों सम्बन्धी जानकारी प्रस्तुत की। तत्पश्चात, माननीय अध्यक्ष की आज्ञा से सातवीं नियामक मण्डल बैठक कार्य सूची/एजैंडा की समीक्षा व आगे के 19 अन्य एजैंडा को विस्तृत चर्चा एवं निर्णय हेतु प्रस्तुत किया।

बैठक में निम्नलिखित निर्णय लिए गए :–

लेखक: डॉ मनोहर लाल (पी. एम. कुल्लू)

- वित्तीय वर्ष 2022–23 के लिए 97 करोड़ रुपये के कोष को मंजूरी दी।
- कांगड़ा जिले के एफसीसीयूए डीएमयू और एफटीयू के लिए 17 वाहनों को किराए पर लेने की मंजूरी दी।
- बकरी पालन, भेड़ पालन, अचार बनाने, पाइन और बैग बनाने आय सृजन गतिविधियों की व्यवसाय योजनाओं के लागत मॉडल को मंजूरी दी गई है।
- परियोजना प्रबंधन परामर्श इकाई को एक वर्ष के लिए विस्तार को मंजूरी दी ।
- सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाली वीएफडीएस/बीएमसी उप–समिति को पुरस्कृत के लिए संस्तुति प्रदान की ।
- निगरानी और मूल्यांकन मैनुअल को मंजूरी दी।
- वित्तीय वर्ष 2022–23 के लिए प्रशिक्षण और एक्सपोजर विजिट कैलेंडर को मंजूरी दी।
- शिमला, कुल्लू और मंडी में बहुउद्देशीय आउटलेट की स्थापना को मंजूरी दी।

आयोजित बैठकें / कार्यशालाऐं / प्रशिक्षण कार्यक्रम

- 15 वीं परियोजना की कार्यकारिणी समिति की बैठक 27 अप्रैल 2022 को हुई।
- हिमाचल प्रदश वन पारिस्थिकी तंत्र प्रबंधन एवं आजीविका सुधार परियोजना के गवर्निंग बॉडी की 7वीं बैठक 28 अप्रैल, 2022 को सचिवालय के आर्मसडेल भवन सभागार, शिमला में आयोजित की गई।

जून तक आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम का विवरणः–

क्र0 सं0	डिवीजन	रेंज	वीएफडीएस	प्रशिक्षित समूह का नाम	आईजीए गतिविधि	प्रशिक्षण एजेंसी	अवधि	प्रतिभागियों की संख्या
1	नाचन	नाचन	दारी	जागृति	मशरूम की खेती	केवीके सुंदरनगर	4 दिन	12
2			सत्योग	देव बाला टिक्का	मशरूम की खेती	केवीके सुंदरनगर	4 दिन	7
3			सत्योग	जय देव ब्रूनी	फ्रूट प्रोसेसिंग	हिल टॉप सॉल्यूशन प्रा0 लिमिटेड	7 दिन	11
4			सैंज	लक्ष्मी	फ्रूट प्रोसेसिंग	हिल टॉप सॉल्यूशन प्रा0 लिमिटेड	7 दिन	10
5			सैंज	शैलपुत्री	मशीन निटिंग	हिल टॉप सॉल्यूशन प्रा0 लिमिटेड	15 दिन	14
6			सैज	जय माँ कश्मीरी	फ्रूट प्रोसेसिंग	हिल टॉप सॉल्यूशन प्रा0 लिमिटेड	7 दिन	10
7	पार्वती	भुंतर	जॉली	मां नैना	कटिंग और सिलाई	महिला कल्याण मंडल कुल्लू	90 दिन	17
8		भुंतर	जॉली	गणपति	हथकरघा	प्रेम शॉल उद्योग	45 दिन	15
9		भुंतर	बौंसु	श्रीपाल	हथकरघा	भुट्टिको शॉल उद्योग	45 दिन	10
10		हुरला	पियाशनी	शांति	बुनाई	महिला कल्याण मंडल कुल्लू	30 दिन	10
11		हुरला	पियाशनी	शक्ति	हथकरघा	प्रेम शॉल उद्योग	45 दिन	9
12		हुरला	निंगना	नव–दुर्गा	बुनाई	महिला कलयाण मंडल कुल्लू	30 दिन	15
13		हुरला	निंगना	आशा किरण (बोशाधर)	बुनाई	महिला कल्याण मंडल कुल्लू	30 दिन	13
14		हुरला	कंमाद	माता मदासना (पारलिसेरी)	कंटिग और सिलाई	महिला कल्याण मंडल कुल्लू	90 दिन	15
15		हुरला	कमांद	काशु नारायण	कंटिग और सिलाई	महिला कल्याण मंडल कुल्लू	90 दिन	15
16	कुल्लू	कुल्लू	बस्तोरी	भुवनेश्वरी	पारंपरिक फसल	केवीके बजौरा	2 दिन	14
17		कुल्लू	सरली	शिव नरेश	मुर्गा पालन	पशु चिकित्सालय सुंदरनगर	6 दिन	10
18		भुट्टी	मल्हाला–पलंग	कृष्णा	बुनाई	महिल कल्याण मंडल कुल्लू	30 दिन	20
19	रामपुर	सराहन	चलरारी–माधारी	महिला ग्राम विकास समूह	कंटिंग एंड टेलरिंग	हिल टॉप सॉल्यूशन प्रा0 लिमिटेड	16 दिन	14
20		सराहन	धेउ–शाहधर	जय ब्रह्मेश्वर	कंटिग एंड टेलरिंग	हिल टॉप सॉल्यूशन प्र0 लिमिटेड	16 दिन	11
21	बिलासपुर	घुमारवीं	कोठी तोबका	नैना	बैग मेकिंग	हिल टॉप सॉल्यूशन प्रा0 लिमिटेड	7 दिन	10
22		घुमारवीं	आदर्श ग्रामीण	बाबा कैलू	सीरा–बड़ी मेकिंग	हिल टॉप सॉल्यूशन प्रा0 लिमिटेड	3 दिन	10
23		घुमारवीं	जीवन ज्योति	राधिका	सीरा–बड़ी मेकिंग	हिल टॉप सॉल्यूशन प्रा0 लिमिटेड	3 दिन	9
24	बंजार	सैंज	सारी	कंचन	हथकरघा	स्थानीय प्रशिक्षण	45 दिन	10

मीडिया में परियोजना की गतिविधियाँ

महिलाओं के जीवन में खुशहाली लाए[गी] जाइका परियोजना: राकेश पठानि[या]

कहा, आत्मनिर्भर और आर्थिक रूप से सुदृढ़ होंगी महिलाएं

10 NEWS

Boon for leaf plates, bowl makers in Himachal after ban of single-use plastic

महिलाओं के जीवन में खुशहाली लाएगी जाइका परियोजना : पठानिया

जायका के अंतर्गत बनी विकास समिति के कार्यों का किया निरीक्षण

जोगिंदनगर : जायका परियोजना के तहत आयोजित शिविर में हिस्सा लेने के उपरांत समितियों के प्रधान व सचिव सेवानिवृत्त डी.एफ.ओ. बी.एस. यादव के साथ सामूहिक चित्र में।

उत्पाद बेचने को बाजार का भी इंतजाम करेगा जायका प्रोजेक्ट

स्वारघाट में वन विभाग अधिकारियों ने लोगों को दी परि...

समिति प्रधान प्रोजेक्ट का धन जल्द करें खर्च : याद[व]

महिलाओं के जीवन में खुशहाली लाएगी जायका परियोजना : राकेश पठानिया

नूरपुर, 22 जुलाई (स.ह.): वन, युवा सेवाएं एवं खेल मंत्री राकेश पठानिया ने कहा है कि प्रदेश में चलाई जा रही जायका परियोजना महिलाओं के जीवन में खुशहाली लाने के साथ-साथ उन्हें आत्मनिर्भर तथा आर्थिक तौ[र] से सुदृढ़ बनाने में विशेष भूमिक[ा] निभाएगी। यह विचार उन्होंने शुक्रवार को नूरपुर के बौड़ में जाय[का] परियोजना के तहत वन मंडल नूर[पुर] में महिलाओं के लिए आयोजि[त] एकदिवसीय प्रशिक्षण शिविर [में] बतौर मुख्य अतिथि शिरकत क[रते] ...

जाइका परियोजना के तहत लगाया प्रशिक्षण शिविर

वन विकास समिति के प्रधानों-सचिवों को दिए टिप्स

महिलाओं के जीवन में खुशहाली लाएगी जायका

चौंतड़ा पौधशाला

विभिन्न स्थानों पर स्वयं सहायता समूहों की बैठकें

विस्तृत जानकारी के लिए संपर्क करें:-

मुख्य परियोजना निदेशक, जाइका वानिकी परियोजना,

पॉटर्स हिल, समरहिल, शिमला–5, हिमाचल प्रदेश। दूरभाषः 0177–2830217, ई.मेलः cpdjica2018hpfd@gmail.com

* * *

परियोजना निदेशक, अनुश्रवण एवं मूल्यांकन इकाई,

जाइका वानिकी परियोजना, कुल्लू। दूरभाषः– 01902–226636, ई.मेल: pdjicakullu@gmail.com

* * *

अतिरिक्त परियोजना निदेशक, सामुदायिक एवं संस्थागत क्षमता उत्थान इकाई,

जाइका वानिकी परियोजना, रामपुर। दूरभाषः 01782–234689, ई.मेलः dpdrmp2018@gmail.com

Website: https://jicahpforestryproject.com